संविधान - क्यों और कैसे_

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» संविधान: आवश्यकता और कार्य

प्रश्न 1 (आसान). अगर किसी समाज में कोई संविधान न हो तो क्या होगा?
उत्तर – लोग आपस में लड़ेंगे, कोई नियम नहीं होगा और हर तरफ अराजकता (chaos) फैल जाएगी।

प्रश्न 2 (आसान). संविधान का सबसे पहला काम क्या है?
उत्तर – समाज में न्यूनतम समन्वय और विश्वास स्थापित करना।

प्रश्न 3 (मध्यम). क्या संविधान सिर्फ नियम बनाता है, या कुछ और भी करता है?
उत्तर – संविधान नियम बनाने के साथ-साथ यह भी तय करता है कि ये नियम कौन बनाएगा और सरकार कैसे काम करेगी।

प्रश्न 4 (कठिन). संविधान सरकार की शक्तियों पर सीमाएं कैसे लगाता है?
उत्तर – संविधान नागरिकों के मौलिक अधिकार तय करता है, और सरकार उन अधिकारों का उल्लंघन नहीं कर सकती, जिससे सरकार की शक्तियों पर रोक लगती है।

» निर्णय-निर्माण शक्ति का निर्धारण

प्रश्न 5 (आसान). संविधान का एक मुख्य कार्य क्या है?
उत्तर – निर्णय लेने की शक्ति का निर्धारण।

प्रश्न 6 (आसान). सरकार का गठन कौन तय करता है?
उत्तर – संविधान।

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर समाज में निर्णय लेने की शक्ति तय न हो तो क्या होगा?
उत्तर – अराजकता और अव्यवस्था फैल जाएगी।

प्रश्न 8 (कठिन). संविधान कैसे सुनिश्चित करता है कि सरकार जनता के प्रति जवाबदेह हो?
उत्तर – यह प्रतिनिधियों के चुनाव और उनकी शक्तियों को परिभाषित करके ऐसा करता है।

» सरकार की शक्तियों पर सीमाएँ

प्रश्न 9 (आसान). संविधान सरकार की शक्तियों पर सीमाएँ क्यों लगाता है?
उत्तर – ताकि सरकार अपनी मनमर्जी न करे और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा हो।

प्रश्न 10 (आसान). क्या सरकार मौलिक अधिकारों का उल्लंघन कर सकती है?
उत्तर – नहीं, संविधान के अनुसार सरकार मौलिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं कर सकती।

प्रश्न 11 (मध्यम). संविधान सरकार की शक्तियों को सीमित करने का सबसे 'सरल तरीका' क्या बताता है?
उत्तर – नागरिकों के 'मौलिक अधिकारों को स्पष्ट' कर देना और यह सुनिश्चित करना कि कोई भी सरकार इनका उल्लंघन न कर सके।

प्रश्न 12 (कठिन). क्या राष्ट्रीय आपातकाल में सरकार मौलिक अधिकारों को 'सीमित' कर सकती है? यदि हाँ, तो क्यों?
उत्तर – हाँ, संविधान कुछ 'परिस्थितियों' का उल्लेख करता है जहाँ 'राष्ट्रीय आपातकाल' में मौलिक अधिकारों को सीमित किया जा सकता है, यह देश की सुरक्षा और व्यवस्था के लिए होता है।

» समाज की आकांक्षाएँ और लक्ष्य

प्रश्न 13 (आसान). संविधान सरकार को केवल शक्ति पर सीमाएँ लगाता है या उसे सकारात्मक कार्य करने की शक्ति भी देता है?

उत्तर – संविधान सरकार को सकारात्मक कार्य करने की शक्ति भी देता है।

प्रश्न 14 (आसान). 'समाज की आकांक्षाएँ और लक्ष्य' पूरा करना संविधान का कौन सा कार्य है?

उत्तर – यह संविधान का चौथा और महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर किसी देश के संविधान में सरकार को 'पर्यावरण संरक्षण' के लिए काम करने का निर्देश दिया गया हो, तो यह संविधान के किस कार्य को दर्शाता है?

उत्तर – यह संविधान के 'समाज की आकांक्षाएँ और लक्ष्य' पूरे करने के कार्य को दर्शाता है।

प्रश्न 16 (कठिन). भारतीय संविधान में 'राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत' सरकार को किस प्रकार 'समाज की आकांक्षाएँ और लक्ष्य' पूरा करने में मदद करते हैं? एक उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

उत्तर – राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत (भाग 4) सरकार को 'सामाजिक और आर्थिक न्याय' स्थापित करने के लिए निर्देश देते हैं, जिससे वह 'समाज की आकांक्षाएँ और लक्ष्य' पूरे कर सके। उदाहरण के लिए, 'सबके लिए पर्याप्त जीवन-स्तर' सुनिश्चित करना या 'बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा' प्रदान करना।

» राष्ट्र की बुनियादी पहचान

प्रश्न 17 (आसान). संविधान हमें कौन सी बुनियादी पहचान देता है?

उत्तर – एक सामूहिक इकाई के रूप में पहचान और एक मूलभूत राजनीतिक पहचान।

प्रश्न 18 (आसान). संविधान की नैतिक पहचान से क्या मतलब है?

उत्तर – यह हमें सही-गलत की समझ और एक-दूसरे के साथ कैसे रहना है, इसके आदर्श सिखाता है।

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर कोई संविधान हमें 'एक विशाल ढाँचा' न दे, तो क्या होगा?

उत्तर – अगर संविधान हमें यह ढाँचा न दे, तो हम अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं और स्वतंत्रताओं का प्रयोग ठीक से नहीं कर पाएंगे, क्योंकि कोई नियम या सीमाएं नहीं होंगी। इससे अराजकता फैल सकती है।

प्रश्न 20 (कठिन). आपके अनुसार, संविधान की 'राष्ट्र की बुनियादी पहचान' बनाने की क्षमता क्यों इतनी महत्वपूर्ण है?

उत्तर – यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किसी भी समाज को एकजुट रखता है। अलग-अलग मतभेदों के बावजूद, यह लोगों को 'एक राष्ट्र' के रूप में सोचने और कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे शांति, स्थिरता और विकास संभव हो पाता है। यह हमें एक साझा भविष्य की ओर देखने में मदद करता है।

» संविधान की प्रभावशीलता के निर्धारक तत्व

प्रश्न 21 (आसान). अगर किसी देश में संविधान सैनिक शासक द्वारा बनाया जाए, तो उसकी प्रभावशीलता पर क्या असर होगा?

उत्तर – उसकी प्रभावशीलता कम होगी क्योंकि लोगों का विश्वास उस पर नहीं होगा।

प्रश्न 22 (आसान). भारतीय संविधान को भारी वैधता कैसे मिली?

उत्तर – उसे ऐसे लोगों ने बनाया जिन पर समाज का अटूट विश्वास था और जिसने राष्ट्रीय आंदोलन की प्रेरणा ली।

प्रश्न 23 (मध्यम). किसी संविधान के मौलिक प्रावधानों का न्यायपूर्ण होना क्यों ज़रूरी है? एक उदाहरण दो।

उत्तर – न्यायपूर्ण होना इसलिए ज़रूरी है ताकि हर व्यक्ति को संविधान का आदर करने का कारण मिले। अगर बहुसंख्यक, अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न करें, तो अल्पसंख्यक संविधान का सम्मान क्यों करेंगे? जैसे, दक्षिण अफ्रीका का संविधान रंगभेद के खिलाफ था, इसलिए उसे स्वीकार्यता मिली।

प्रश्न 24 (कठिन). संविधान में 'अवरोध और संतुलन' (checks and balances) का सिद्धांत प्रभावशीलता को कैसे बढ़ाता है? विस्तार से समझाओ।

उत्तर – अवरोध और संतुलन यह सुनिश्चित करता है कि किसी एक संस्था के पास सारी शक्तियाँ न हों, बल्कि शक्तियाँ विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में बँटी हों। इससे अगर कोई एक संस्था संविधान को नष्ट करना चाहे, तो दूसरी संस्थाएँ उसे रोक सकती हैं। यह शक्तियों के दुरुपयोग को रोकता है और संविधान को लंबे समय तक बनाए रखता है, जैसे भारतीय संविधान में यह व्यवस्था है।

» संस्थाओं की संतुलित रूपरेखा

प्रश्न 25 (आसान). संविधान में शक्ति को किन तीन मुख्य संस्थाओं में बांटा गया है?

उत्तर – विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।

प्रश्न 26 (आसान). एक बहुत कठोर संविधान क्यों सफल नहीं हो पाता?

उत्तर – वह बदलती आवश्यकताओं के अनुसार खुद को ढाल नहीं पाता।

प्रश्न 27 (मध्यम). अगर संविधान में सिर्फ लचीलापन हो और कठोरता न हो, तो क्या समस्या आ सकती है?

उत्तर – अगर संविधान अत्यधिक लचीला होगा तो वह समाज को सुरक्षा और पहचान नहीं दे पाएगा, क्योंकि कोई भी उसे आसानी से बदल सकेगा।

प्रश्न 28 (कठिन). भारतीय संविधान में 'अवरोध और संतुलन' का एक और उदाहरण दीजिए, जो विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका से अलग हो।

उत्तर – भारत का निर्वाचन आयोग एक स्वतंत्र संवैधानिक निकाय है जो यह सुनिश्चित करता है कि चुनाव निष्पक्ष हों। यह कार्यपालिका या विधायिका के सीधे नियंत्रण में नहीं है, और इस प्रकार यह 'अवरोध और संतुलन' का एक अन्य महत्वपूर्ण हिस्सा है।

» भारतीय संविधान का निर्माण: पृष्ठभूमि और संरचना

प्रश्न 29 (आसान). भारतीय संविधान का निर्माण किसने किया?

उत्तर – संविधान सभा (Constituent Assembly)

प्रश्न 30 (आसान). संविधान सभा की पहली बैठक कब हुई थी?

उत्तर – 9 दिसंबर 1946

प्रश्न 31 (मध्यम). संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव कैसे हुआ था?

उत्तर – प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव (Indirect election by members of Provincial Legislative Assemblies).

प्रश्न 32 (कठिन). विभाजन के बाद संविधान सभा में सदस्यों की संख्या कितनी रह गई थी और उनमें से कितने सदस्यों ने अंतिम संविधान पर हस्ताक्षर किए?

उत्तर – विभाजन के बाद सदस्यों की संख्या 299 रह गई थी, और उनमें से 284 सदस्यों ने अंतिम संविधान पर हस्ताक्षर किए।

» संविधान सभा की कार्यशैली और राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत

प्रश्न 33 (आसान). संविधान सभा की कार्यशैली में किस बात पर सबसे ज़्यादा जोर दिया गया था?

उत्तर – चर्चा और तर्कपूर्ण बहसों पर।

प्रश्न 34 (आसान). राष्ट्रीय आंदोलन से संविधान सभा को कौन से महत्वपूर्ण सिद्धांत विरासत में मिले?

उत्तर – समानता, स्वतंत्रता, लोकतंत्र, संप्रभुता।

प्रश्न 35 (मध्यम). किस एक प्रावधान पर संविधान सभा में लगभग कोई वाद-विवाद नहीं हुआ?
उत्तर – सार्वभौमिक मताधिकार पर।

प्रश्न 36 (कठिन). जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत 'उद्देश्य-प्रस्ताव' का भारतीय संविधान के निर्माण में क्या महत्व था?
उत्तर – यह संविधान के सभी मूलभूत 'आकांक्षाओं और मूल्यों' को परिभाषित करता था, जैसे समानता, स्वतंत्रता, लोकतंत्र, और एक सर्वजनीन पहचान, जिससे संविधान को एक नैतिक आधार मिला।

» उद्देश्य-प्रस्ताव और संस्थागत व्यवस्थाएँ

प्रश्न 37 (आसान). उद्देश्य-प्रस्ताव किसने पेश किया था?
उत्तर – पंडित जवाहरलाल नेहरू

प्रश्न 38 (आसान). उद्देश्य-प्रस्ताव के अनुसार, भारत कैसा गणराज्य होगा?
उत्तर – स्वतंत्र और संप्रभु

प्रश्न 39 (मध्यम). संविधान की किन संस्थागत व्यवस्थाओं का उल्लेख इस अवधारणा में किया गया है?
उत्तर – विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।

प्रश्न 40 (कठिन). उद्देश्य-प्रस्ताव में 'जनता' को शक्ति का स्रोत बताया गया है, यह आज संविधान के किस हिस्से में सबसे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है?
उत्तर – संविधान की प्रस्तावना (Preamble) में, जो 'हम भारत के लोग' से शुरू होती है।

» विभिन्न देशों के संविधानों से लिए गए प्रावधान

प्रश्न 41 (आसान). मौलिक अधिकार (Fundamental Rights) किस देश के संविधान से लिए गए हैं?
उत्तर – अमेरिका (United States of America)

प्रश्न 42 (आसान). राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांत (Directive Principles of State Policy) किस देश से अपनाए गए हैं?
उत्तर – आयरलैंड (Ireland)

प्रश्न 43 (मध्यम). कनाडा के संविधान से भारतीय संविधान ने कौन सी महत्वपूर्ण व्यवस्था ली है?
उत्तर – कनाडा से 'एक सशक्त केंद्र के साथ संघीय व्यवस्था' (A federal system with a strong centre) का प्रावधान लिया गया है, जिसका मतलब है कि केंद्र सरकार राज्यों की तुलना में ज़्यादा शक्तिशाली है।

प्रश्न 44 (कठिन). फ्रांस के संविधान से लिए गए 'स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व' के विचार हमारे संविधान में क्या महत्व रखते हैं?
उत्तर – ये विचार हमारे संविधान की प्रस्तावना (Preamble) में शामिल हैं और भारतीय समाज के मूल्यों को दर्शाते हैं। 'Liberty, Equality, and Fraternity' यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी नागरिकों को स्वतंत्रता मिले, किसी से भेदभाव न हो और सब एक-दूसरे से भाईचारे के साथ रहें। यह हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन के आधारभूत सिद्धांत हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक गाँव में अलग-अलग विचारों वाले लोग रहते हैं। कुछ लोग चाहते हैं कि गाँव की सारी ज़मीन बड़े किसान के पास हो, और कुछ चाहते हैं कि ज़मीन सबको बराबर बाँटी जाए। ये लोग कैसे एक साथ शांति से रहेंगे?

› पहला कदम: सभी लोग मिलकर कुछ 'बुनियादी नियमों' पर सहमत होते हैं।
› दूसरा कदम: ये नियम तय करते हैं कि ज़मीन का बंटवारा कौन और कैसे करेगा, ताकि सब को न्याय मिले।
› तीसरा कदम: इन नियमों को एक 'ग्राम संविधान' की तरह लिख लिया जाता है, जिस पर सभी सहमत हों और जिसका पालन सब करें।
› चौथा कदम: इस 'ग्राम संविधान' से सभी को भरोसा मिलता है कि उनके साथ भेदभाव नहीं होगा और गाँव में 'समन्वय' बना रहेगा।

उत्तर – गाँव में 'संविधान' जैसे बुनियादी नियमों का समूह बनाकर सब लोग शांति और न्याय के साथ रह सकते हैं।

उदाहरण 2. भारतीय संविधान में निर्णय लेने की शक्ति किसके पास है?

› पहला चरण: संविधान स्पष्ट करता है कि भारत में 'The people are the ultimate source of all power'.

› दूसरा चरण: 'People exercise this power through their elected representatives.' यानी जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है.

› तीसरा चरण: ये चुने हुए प्रतिनिधि 'form the government' और 'make laws on behalf of the people'.

› चौथा चरण: 'Thus, the power to make decisions rests with the Parliament and State Legislatures', जो जनता द्वारा चुने जाते हैं।

उत्तर – भारतीय संविधान में निर्णय लेने की सर्वोच्च शक्ति जनता के पास है, जिसका प्रयोग वह अपने चुने हुए प्रतिनिधियों (सांसदों और विधायकों) के माध्यम से करती है।

उदाहरण 3. भारतीय संविधान कैसे सरकार की 'नागरिकों को बिना कारण गिरफ्तार' करने की शक्ति को सीमित करता है?

› पहला कदम, संविधान मौलिक अधिकारों को स्पष्ट करता है। इसमें 'गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण' का अधिकार शामिल है।

› दूसरा कदम, संविधान कहता है कि किसी भी व्यक्ति को 'मनमाने ढंग से बिना किसी कारण के गिरफ्तार' नहीं किया जा सकता। यह सरकार के लिए एक सीधी-सीधी पाबंदी है।

› तीसरा कदम, अगर सरकार किसी को गिरफ्तार करती भी है, तो उसे 24 घंटे के अंदर 'न्यायाधीश के सामने पेश' करना होता है और गिरफ्तारी का 'कारण बताना' होता है।

› यह सुनिश्चित करता है कि सरकार अपनी शक्ति का 'मनमाना प्रयोग' न करे और नागरिकों के 'मौलिक अधिकारों' का हनन न हो।

उत्तर – भारतीय संविधान मौलिक अधिकारों के माध्यम से सरकार को नागरिकों को बिना कारण गिरफ्तार करने से रोकता है, यह सुनिश्चित करता है कि हर गिरफ्तारी कानूनी और न्यायपूर्ण हो।

उदाहरण 4. भारतीय संविधान का कौन सा भाग सरकार को 'सामाजिक और आर्थिक न्याय' स्थापित करने की शक्ति देता है, और इसका एक उदाहरण दें?

› भारतीय संविधान का भाग 4, जिसे 'राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत' (Directive Principles of State Policy) कहते हैं, सरकार को सामाजिक और आर्थिक न्याय स्थापित करने की शक्ति देता है।

› यह भाग सरकार को बताता है कि उसे कैसा समाज बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

› उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 39(b) कहता है कि सरकार को 'समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार वितरित करना चाहिए कि वह सामूहिक हित का सर्वोत्तम साधन हो'।

› इसका मतलब है कि सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि देश के संसाधन कुछ ही हाथों में न रहें, बल्कि सबका भला हो।

› एक और उदाहरण है अनुच्छेद 45, जो 'बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा' का प्रावधान करता है। यह सरकार का कर्तव्य है कि वह इसे पूरा करे।

उत्तर – भारतीय संविधान का 'राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत' (भाग 4) सरकार को सामाजिक और आर्थिक न्याय स्थापित करने की शक्ति देता है। इसका एक उदाहरण 'बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा' का प्रावधान है, जो सरकार को यह सुनिश्चित करने का निर्देश देता है कि सभी बच्चों को शिक्षा मिले।

उदाहरण 5. भारतीय संविधान कैसे 'एक सामूहिक इकाई के रूप में पहचान' स्थापित करता है?

› भारतीय संविधान की प्रस्तावना में लिखा है, 'हम भारत के लोग' – यह वाक्य दिखाता है कि संविधान भारतीयों को एक इकाई के रूप में देखता है, अलग-अलग टुकड़ों में नहीं।

› यह सभी नागरिकों को समान अधिकार (जैसे वोट का अधिकार, समानता का अधिकार) देता है, जिससे सब एक ही कानून के दायरे में आ जाते हैं।

› संविधान एक केंद्र सरकार स्थापित करता है जो पूरे देश पर शासन करती है, और एक झंडा, एक राष्ट्रगान, एक राष्ट्रीय प्रतीक जैसी चीजें भी देता है जो हमारी सामूहिक पहचान के प्रतीक हैं।

› विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं के बावजूद, संविधान 'सेक्युलरिज्म' और 'भाईचारे' के मूल्यों को बढ़ावा देकर सबको जोड़ता है, जिससे एक साझा राष्ट्रीय पहचान बनती है।

उत्तर – भारतीय संविधान 'हम भारत के लोग' की भावना को बढ़ावा देकर, सभी नागरिकों को समान अधिकार और एक साझा शासन व्यवस्था देकर, और राष्ट्रीय प्रतीकों व मूल्यों के माध्यम से एक सामूहिक राष्ट्रीय पहचान स्थापित करता है।

उदाहरण 6. मान लो, एक देश 'अ' है, जहाँ एक तानाशाह ने अपनी मर्ज़ी से एक संविधान बनाया। उसने खुद को सारी शक्तियाँ दे दीं और बाकी नागरिकों के अधिकारों को बहुत कम कर दिया। वहीं, एक दूसरा देश 'ब' है, जहाँ जनता के प्रतिनिधियों ने एक लंबी बहस और आम सहमति से संविधान बनाया, जिसमें सबके अधिकारों का ध्यान रखा गया। बताओ, कौन सा संविधान ज़्यादा प्रभावी होने की संभावना रखता है और क्यों?

› पहला कदम: हमें यह देखना होगा कि संविधान को 'प्रचलन में लाने का तरीका' क्या था। देश 'अ' में तानाशाह ने बनाया, जो कि अलोकप्रिय तरीका है। देश 'ब' में जनता के प्रतिनिधियों ने बनाया, जो लोकप्रिय तरीका है।

› दूसरा कदम: फिर हम देखेंगे 'मौलिक प्रावधान'। देश 'अ' में तानाशाह ने अपने फायदे के लिए प्रावधान रखे, जो न्यायपूर्ण नहीं हैं। देश 'ब' में सबके अधिकारों का ध्यान रखा गया, जो न्यायपूर्ण है।

› तीसरा कदम: 'संस्थाओं की संतुलित रूपरेखा' पर विचार करें। देश 'अ' में सारी शक्ति एक व्यक्ति के पास है, कोई संतुलन नहीं है। देश 'ब' में शक्तियों का बँटवारा होगा, जिससे संतुलन बना रहेगा।

› चौथा कदम: 'लचीलेपन' के बारे में सोचें। तानाशाह का संविधान बहुत कठोर हो सकता है या बिल्कुल भी लचीला नहीं। लोकतांत्रिक संविधान में बदलाव की गुंजाइश होती है।

उत्तर – देश 'ब' का संविधान ज़्यादा प्रभावी होने की संभावना रखता है। क्योंकि उसे लोकप्रिय नेताओं ने आम सहमति से बनाया है, उसके प्रावधान न्यायपूर्ण हैं, और उसमें शक्तियों का संतुलन भी है। इससे लोगों को उसे मानने का एक ठोस कारण मिलता है।

उदाहरण 7. संविधान की संस्थागत रूपरेखा में 'अवरोध और संतुलन' (Checks and Balances) क्यों महत्वपूर्ण है? एक उदाहरण से समझाइए।

› पहला, हमें यह समझना होगा कि 'अवरोध और संतुलन' का मतलब क्या है। इसका मतलब है कि संविधान शक्तियों को अलग-अलग संस्थाओं में बांट देता है, ताकि 'कोई एक संस्था संविधान को नष्ट न कर सके।'

› दूसरा, ये संस्थाएं एक-दूसरे पर नज़र रखती हैं और एक-दूसरे की शक्ति को सीमित करती हैं। अगर कोई एक संस्था अपनी शक्ति का गलत इस्तेमाल करना चाहे, तो दूसरी संस्था उसे रोक सकती है।

› उदाहरण के लिए, हमारे देश में 'विधायिका' कानून बनाती है। लेकिन अगर वो कोई ऐसा कानून बनाए जो संविधान के खिलाफ हो, तो 'न्यायपालिका' (सुप्रीम कोर्ट) उसे 'असंवैधानिक' (unconstitutional) घोषित करके रद्द कर सकती है।

› इसी तरह, 'कार्यपालिका' कानूनों को लागू करती है, लेकिन 'विधायिका' (संसद) अविश्वास प्रस्ताव (no-confidence motion) लाकर कार्यपालिका (सरकार) को हटा सकती है। ये सब 'अवरोध और संतुलन' के उदाहरण हैं।

उत्तर – अवरोध और संतुलन इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि कोई एक संस्था असीमित शक्ति का प्रयोग न कर सके और संविधान की मूल भावना को सुरक्षित रखा जा सके। जैसे, भारत में न्यायपालिका विधायिका द्वारा बनाए गए कानूनों की संवैधानिकता की जाँच करती है।

उदाहरण 8. संविधान सभा की संरचना को 'कैबिनेट मिशन योजना' के अनुसार समझाइए।

› पहला कदम: 'कैबिनेट मिशन योजना' ने तय किया कि सीटों का बंटवारा जनसंख्या के अनुपात में होगा। 'One seat for every million people' – हर दस लाख लोगों पर एक सीट।

› दूसरा कदम: इसके तहत, '292 members were to be chosen from British India provinces' – ब्रिटिश सरकार के सीधे शासन वाले प्रांतों को 292 सदस्य चुनने थे।

› तीसरा कदम: '93 seats were allotted to princely states' – देसी रियासतों को न्यूनतम 93 सीटें दी गईं।

› चौथा कदम: 'Seats within each province were divided among three major communities - Muslims, Sikhs, and General' – हर प्रांत की सीटों को तीन मुख्य समुदायों - मुसलमान, सिख और सामान्य में बांटा गया था, उनकी जनसंख्या के हिसाब से।

› पांचवां कदम: 'Members of each community in the provincial legislative assembly elected their own representatives' – प्रांतीय विधानसभाओं में हर समुदाय के सदस्य अपने प्रतिनिधियों को 'proportional representation by means of single transferable vote' के ज़रिए चुनते थे।

› छठा कदम: 'The method of selection for representatives of princely states was to be determined by consultation' – देसी रियासतों के प्रतिनिधियों के चुनाव का तरीका उनके परामर्श से तय किया गया था।

उत्तर – इस प्रकार, कैबिनेट मिशन योजना ने संविधान सभा की सीटों का बंटवारा जनसंख्या, प्रांतीय प्रतिनिधित्व और सामुदायिक आधार पर सुनिश्चित किया, जिसमें अप्रत्यक्ष चुनाव पद्धति का उपयोग किया गया।

उदाहरण 9. संविधान सभा की कार्यशैली और राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत ने भारतीय संविधान के निर्माण में कैसे योगदान दिया?

› पहला चरण: संविधान सभा की कार्यशैली को समझें। इसमें यह समझना ज़रूरी है कि 'लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति निष्ठा' और 'सार्वजनिक विवेक' को महत्व दिया गया। सदस्यों ने अपने व्यक्तिगत हितों के बजाय 'पूरे देश के हित को ध्यान में रखकर विचार-विमर्श किया' और 'चर्चा और तर्कपूर्ण बहसों पर काफी जोर दिया' जिससे फैसलों में गहराई आई।

› दूसरा चरण: राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत के प्रभाव को पहचानें। यहाँ हमें समझना होगा कि संविधान सभा 'उन सिद्धांतों को मूर्त रूप और आकार दे रही थी जो उसने राष्ट्रीय आंदोलन से विरासत में प्राप्त किए थे'। जैसे 'नेहरू द्वारा 1946 में प्रस्तुत 'उद्देश्य-प्रस्ताव'' जिसमें समानता, स्वतंत्रता, लोकतंत्र जैसे मूल्य शामिल थे, ये सीधे आंदोलन से आए थे।

› तीसरा चरण: दोनों कारकों के योगदान को एक साथ जोड़ें। संविधान सभा की खुली और बहस-आधारित कार्यशैली ने राष्ट्रीय आंदोलन से मिले उच्च आदर्शों और मूल्यों (विरासत) को ठोस कानूनी रूप दिया। इस तरह, संविधान केवल कानूनों का संग्रह नहीं, बल्कि उन आदर्शों की पूर्ति का एक नैतिक दस्तावेज बन पाया।

उत्तर – संविधान सभा की लोकतांत्रिक और समावेशी कार्यशैली, जिसने जनहित को प्राथमिकता दी और तर्कपूर्ण बहस को बढ़ावा दिया, और राष्ट्रीय आंदोलन से मिली समानता, स्वतंत्रता व लोकतंत्र जैसे मूल्यों की विरासत, दोनों ने मिलकर भारतीय संविधान को एक मजबूत और जन-केंद्रित दस्तावेज बनाया, जो सिर्फ नियमों का संग्रह नहीं बल्कि राष्ट्र की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है।

उदाहरण 10. उद्देश्य-प्रस्ताव के किन्हीं दो मुख्य बिंदुओं को स्पष्ट करें और बताएं कि वे आज के भारतीय संविधान में कैसे दिखते हैं।

› पहला बिंदु: 'India is an Independent, Sovereign Republic.' इसका मतलब है भारत एक स्वतंत्र, संप्रभु गणराज्य होगा। आज के संविधान में यह प्रस्तावना (Preamble) में साफ दिखता है, जहाँ 'भारत एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य' कहा गया है।

› दूसरा बिंदु: 'All people of India shall be guaranteed and secured social, economic and political justice.' मतलब सभी लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय मिलेगा। यह आज हमारे संविधान के मौलिक अधिकारों (Fundamental Rights) और राज्य के नीति निदेशक तत्वों (Directive Principles of State Policy) में पूरी तरह से समाहित है, जैसे समानता का अधिकार और कमजोर वर्गों के लिए विशेष प्रावधान।

उत्तर – उद्देश्य-प्रस्ताव ने भारत को स्वतंत्र, संप्रभु गणराज्य बनाने और सभी नागरिकों को न्याय सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा, जो आज संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों और नीति निदेशक तत्वों में स्पष्ट रूप से मौजूद है।

उदाहरण 11. ब्रिटेन के संविधान से भारतीय संविधान में कौन से दो प्रमुख प्रावधान लिए गए हैं?

› पहला प्रावधान है 'संसदीय शासन प्रणाली' (Parliamentary form of government)। इसका मतलब है कि हमारे देश में प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद मिलकर सरकार चलाते हैं, और वे संसद के प्रति जवाबदेह होते हैं।

› दूसरा प्रावधान है 'कानून का शासन' (Rule of Law)। इसका अर्थ है कि देश में सब लोग, चाहे वे कितने भी बड़े क्यों न हों, कानून की नज़र में बराबर हैं और कानून से ऊपर कोई नहीं है।

उत्तर – ब्रिटेन के संविधान से भारतीय संविधान में 'संसदीय शासन प्रणाली' और 'कानून का शासन' के प्रावधान लिए गए हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- संविधान की आवश्यकता और कार्यों पर सीधा प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आता है। इसके मुख्य बिन्दुओं को अच्छे से समझकर याद करें।

- यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर सीधे प्रश्न के रूप में आता है कि 'संविधान के मुख्य कार्य क्या हैं?' तो इसे अच्छे से समझकर जाना।
- बोर्ड परीक्षा में, 'सरकार की शक्तियों पर सीमाएँ' से जुड़े प्रश्न अक्सर मौलिक अधिकारों के साथ पूछे जाते हैं। अलग-अलग मौलिक अधिकारों के उदाहरण देकर समझाएँ कि वे कैसे सरकार को नियंत्रित करते हैं।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'संविधान के कार्यों' से संबंधित प्रश्नों में पूछी जाती है। इसे 'सरकार पर सीमाएँ' लगाने वाले कार्य से अलग करके समझें और दोनों को उदाहरणों के साथ तैयार करें।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि संविधान के प्रमुख कार्य क्या हैं। 'राष्ट्र की बुनियादी पहचान' वाला बिंदु इसमें बहुत महत्वपूर्ण है, इसे अच्छे से समझना और लिखना।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 4 या 6 अंकों के प्रश्न आते हैं। खास तौर पर 'संविधान को प्रचलन में लाने का तरीका' और 'मौलिक प्रावधान' वाले बिंदुओं पर ध्यान देना।
- संविधान सभा की तारीखें (पहली बैठक, हस्ताक्षर) और सदस्यों की संख्या (कुल, विभाजन के बाद) सीधे प्रश्न के रूप में आती हैं, इन्हें ज़रूर याद कर लेना।
- यह भाग बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'संविधान सभा की कार्यशैली' और 'राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत' दोनों पर अलग-अलग या मिलाकर प्रश्न आ सकते हैं। 'उद्देश्य-प्रस्ताव' का महत्व अच्छे से याद रखना।
- उद्देश्य-प्रस्ताव के मुख्य बिंदुओं और भारतीय संविधान में उनके प्रतिबिंब पर सीधे प्रश्न आ सकते हैं, इसे ध्यान से समझें।
- यह भाग अक्सर परीक्षा में 'मैच द कॉलम' (Match the following) या सीधे सवाल के रूप में पूछा जाता है कि कौन सा प्रावधान किस देश से लिया गया है। इसे अच्छे से याद कर लेना।

एक नज़र में रिवीज़न

› संविधान: बुनियादी नियम, समन्वय, विश्वास, सरकार की शक्तियां तय करना, अधिकार सुरक्षा।
› संविधान: निर्णय-शक्ति और सरकार के गठन का निर्धारण।
› संविधान सरकार की शक्तियों को मौलिक अधिकारों से सीमित करता है; उल्लंघन असंभव।
› संविधान सरकार को समाज की आकांक्षाएँ व लक्ष्य पूर्ण करने की क्षमता देता है।
› संविधान राष्ट्र की सामूहिक, राजनीतिक और नैतिक पहचान बनाता है।
› प्रभावी संविधान = लोकप्रिय निर्माण + न्यायपूर्ण प्रावधान + संतुलित शक्ति + लचीलापन।
› संविधान सभा ने बनाया; 9 Dec 1946 पहली बैठक; अप्रत्यक्ष चुनाव; 299 सदस्य (विभाजन के बाद)।
› संविधान सभा की कार्यशैली (बहस, जनहित) और राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत (उद्देश्य-प्रस्ताव) ने संविधान को आकार दिया।
› उद्देश्य-प्रस्ताव ने भारतीय संविधान के मूल्यों व संस्थागत व्यवस्थाओं की नींव रखी।
› संविधान में ब्रिटेन, अमेरिका, आयरलैंड, फ्रांस, कनाडा से प्रमुख प्रावधान लिए गए।